

दीपावली

गहन तिमिर में मग्न मनुज का
चिर प्रकाश अन्वेषण।
करता है नैराश्य ग्रस्त मन
में आशा संप्रेषण।
घोर अमा में भी भारत सुत
मोद मना सकते हैं।
निज उद्यम से जनित विभा से
नभ चमका सकते हैं।

जब बनती आधार मृत्तिका
स्नेह सूत्र दोनों की।
आवश्यक ता पड़ती तम को
छिपने को कोनों की।
इस मिट्टी ने ही उपजाया
अनुपम दीप शिखा को।
जिस ने किया अशेष प्रकाशित
जग की सभी दिशा को। ।

हम ईश्वर स्वागत को तत्पर
घिर कर भी घन तम में
क्योंकि प्रकाश गूढ़ ले उपजे
अपने अन्तर तम में।
यहाँ विजय का अर्थ और फल
जग में विभा प्रसारण।
नहीं मान उन्माद द्रव्य का
हरण रमणिजन धर्षण। ।

मोल न मिट्टी का यदि जाना
किया सनेह उपेक्षित।
महिमा समझी नहीं सूत्र की
कर्म न रहा समीक्षित।

वाट न जोही राम आगमन
की सोयी जिज्ञासा।
तो प्रकाश दर्शन की रहनी
है अपूर्ण अभिलाषा। ।

साधन वान मदान्ध असुर का

साधन वान मदान्ध असुर का
नहीं असम्भव परिभव।
विना राज्य के या सेना के
किया राम ने सम्भव।
निज बल पर विश्वास जगाती
दीपित सुखद दिवाली।
लघु दीपों से अभिभव पाती
अमा निशा भी काली। ।

अब उत्साह ज्वार रोधन क्षम
जग में कौन सदानव।
जब है उत्स प्रस्फुटित उर से
शीतल अमल सदा नव।
अब हैं विजयी राम धरा से
प्रस्थित हैं खर दूषण।
अब न विवश नर देव करें जो
खल का महिमा भूषण। ।

नवलोत्साह नव्य उद्यम युत
धरे सफलता मानव
नित वर्धिनी अभ्युदय कारिणि
आए स्वतः रमा नव।
दृढ हों मैत्री सूत्र स्नेह भी
नित प्रगाढ़ता धारे।
विकसे सहज लगाव भूमि से
सुख भागी हों सारे। ।

भोपाल। शिव कुमार मिश्र
31:10:2024